7-3-67 ओम शान्ती प्रातः क्लास

तुम बच्चे हो। बच्चे की आए तबीयत ठीक नही होगी तो कहेंगे भले यहां सो जाओ। इसमें कोई हर्जा नही है। क्यों कि सिकीलधे बच्चे हैं। अर्थात 5000 वर्ष बाद फिर से आकर मिले हैं। किसको मिले हैं? बेहद के बाप को। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो जिनको निश्चय है। बोलो हम तो बेहद के बाप से मिले हैं। क्यों कि बाप होते भी हैं हद के और बेहद के। दुःख में सभी बेहद के बाप को याद करते है। सतयुग में (लौकिक) ही बाप को याद करते है क्यों कि वहां तो है ही सुख धाम। लौकिक बाप उनको कहा जाता है जो इस लोक में जन्म देते है। पारलौकिक बाप तो एक ही बार आकर तुमको अपना बनाते हैं। तुम रहने वाले भी बाप के साथ अमर लोक के हो। जिसको परलोक, परमधाम भी कहा जाता है। वो है परे ते परे धाम स्वर्ग को कोई परे ते परे नही कहेंगे। स्वर्ग नर्क यहां ही होता है। नई दुनियां को स्वर्ग। पुरानी दुनियां को नर्क कहा जाता है। अभी है पतित दुनियां। पुकारते भी है हे पतित पावन आओ! सतयुग में ऐसे नही कहेंगे। जब से रावण राज्य होता है तब से पतित बनते हैं। इनको कहेंगे पांच विकारों का राज्य। सतयुग में है ही निर्विकारी राज्य। भारत की कितनी जबरदस्त महिमा है। परन्तु विकारी होने कारण भारत की महिमा को जानते ही नही है। भारत ही सम्पूर्ण निर्विकारी था। तब ल-न राज्य करते थे। अब वो राज्य नही है। वो कहां गये यह भी पत्थर बुध्दियों को पता ही नही है। और सभी अपने-2 धर्म स्थापक को जानते हैं। एक भारतवासी ही हैं जो न तो अपने धर्म को जानते ना ही अपने धर्म स्थापक को जानते हैं। और धर्म वाले अपने धर्म को तो जानते है। परन्तु वो फिर कब स्थापन करने आवेंगे वो नही जानते है। सिख लोगों को यह पता नही है कि हमारा सिख धर्म पहले नही था। गुरु नानक ने आकर स्थापन किया है। तो जरूर फिर सिख धर्म नही रहेगा। तब ही गुरु नानक आकर फिर स्थापन करेंगे। क्यों कि वो वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्रफी रिपीट होती है ना। नानक अभी कहां है यह भी कोई नही जानते हैं। क्रिश्चन धर्म भी नही था। फिर स्थापन हुआ। पहले नई दुनियां थी। एक धर्म था। सिर्फ तुम भारतवासी ही थे। फिर तुम 84 जन्म लेते-2 यह सब भूल गये हो कि हम ही देवता थे फिर हमी ने 84 जन्म लिये है। तब बाप कहते है तुम अपने 84 जन्मों को नही जानते हो मैं बताता हुं। आधा कल्प राम राज्य था। फिर रावण राज्य हुआ है। पहले है सूर्यवंशी घराणा फिर चन्द्रवंशी घराना राम राज्य। सूर्यवंश में ल-न का राज्य था। हमी जो सूर्यवंशी घराने के थे सो ही 84 जन्म लेते-2 अब रावण वंशी बने है। आगे पुण्यात्माओं के घराने में थे अब पापात्माओं के घराने के बने हैं। 84 जन्म लेते हैं। वो तो 84 लाख कह देते है। अब 84 लाख का कौन बैठ विचार करेंगे। इसलिये कोई का विचार चलता ही नही है। अब तुमको बाप ने समझाया है। तुम बाप के आगे बैठे हो। निराकार बाप और साकारी बाप दोनो ही भारत में नामी ग्रामी है। गाते भी है परन्तु बाप को जानते नही है। अज्ञान नींद में सोये हुये है। ज्ञान से जागृती होती है। रोशनी में मनुष्य धक्का नही खाते है। अंधेरे में मनुष्य धक्के ही खाते रहते है। भारतवासी ही पूज्य थे अब फिर पुजारी है। ल-न पूज्य थे ना। यह किसकी पूजा करेंगे? अपने चित्र बनो कर अपनी ही पूजा तो नही करेंगे ना। यह हो नही सकता। तुम बच्चे जानते हो हम ही पूज्य सो ही फिर पुजारी कैसे बनते है। और कोई यह बातें समझ नही सकेंगे। बाप ही समझाते है। इसलिये ही गाते है ईश्वर की गत मत न्यारी है। अब तुम बच्चे जानते हो बाबा ने हमारी सारी ही दुनियां से गत मत न्यारी ही कर दी है। सारी दुनियां में अनेक मत मतान्तर है। यहां तुम ब्राह्मणों की है एक मत। ईश्वर की मत और मत। गत अर्थात सद्गती। सद्गती दाता तो है ही एक बाप। गाते भी है सर्व की सद्गती दाता राम। परन्तु पत्थर बुधी होने कारण समझते नही है कि राम किसको कहा जाता है। शिव को थोड़ेई राम कहा जाता है। परन्तु पत्थर बुधी शिव को भी राम कह देते है। कहेंगे जिधर देखो राम ही राम रमते है। रमते तो मनुष्य है ना। तो इस को ही कहा जाता है अज्ञान [illegible]

सुख। अरे मैं ही पुकारते है ना। बन्दगी करना माना ही बाप को बुलाना। भीख मांगते है। देवताओं के मन्दिर में भी जाकर भीख मांगते है। शान्ती देवा... तो यह भीख मांगना हुआ ना। सतयुग में तो भीख मांगने की दरकार ही नही होती। भिखारी को इनसालवन्ट कहा जाता है। सतयुग में तुम कितने सालवन्ट थे। इसको कहा ही जाता है सालवन्ट भारत। अब है इनसालवन्ट भारत। यह तो कोई भी समझ सकते है। कल्प की आयु उल्टी सुल्टी लिख देने से मनुष्यों का माथा ही खराब हो गया है। बाप बहुत ही प्यार से बैठ समझाते है। कल्प पहले भी तुम बच्चों को समझाया था कि पतित पावन मुझ बाप को याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। पतित कैसे बने हो? विकारों की खाद पड़ने से। कट(जंग) लग गया है। इस समय के मनुष्य सब ही जंग खाये हुये है। अब वो जंक कैसे निकले? मुझे याद करो। देह अभिमान छोड़ कर देही अभिमानी बनो। अपने को आत्मा समझो। पहले तुम हो आत्मा। फिर शरीर लेते हो। आत्मा अमर है। शरीर तो मृत्यु को पाता है। सतयुग को कहा ही जाता है अमर लोक। दुनियां भर में यह कोई भी नही जानते कि अमर लोक था। फिर मृत्यु लोक कैसे बना? अमर लोक अर्थात अकाले मृत्यु नही होती है। वहां आयु भी बड़ी होती है। वो तो है ही पवित्र दुनियां। सुख राज रिद्धी हो ना। रिद्धी पवित्र को ही कहा जाता है। तुमको पवित्र किसने बनाया? उनको तो बनाते है शंकराचार्य। तुमको बना रहे है शिवाचार्य। यह कोई पढ़ाहुआ नही है। इन द्वारा तुमको शिव बाबा आ कर पढ़ाते है। शंकराचार्यने तो गर्भ से जन्म लिया है। कोई ऊपर से फूट कर नही आया। बाप तो इनमें प्रवेश करते है। आते है, जाते है। मालिक है। जिसमें चाहिये उसी में जा सकते है। बाबा ने समझाया है कोई का कल्याण करने अर्थ मैं जाता हूं। आता तो पतित तन में ही हूं ना। इनमें तो फिर भी ज्ञान है। कोई बिलकुल इडियट है उनमें भी प्रवेश करता हूं कोई के कल्याण करने अर्थ। सिर्फ ब्राह्मण हो। बहुतों का कल्याण करता हूं। परन्तु माया भी कम नही है। मेरे बदले माया भी कईयों में प्रवेश कर लेती है। फिर कहती है मैं शिव हूं। फलाना हूं। माया भी बड़ी शैतान है। समझदार बच्चे अच्छी रीती समझ जावेंगे कि यह किसकी प्रवेशता है। शरीर तो उनका मुकर यही है ना। फिर दूसरों का हम सुने ही क्यों? अगर सुनते हो तो भी बाबा से पूछो इनकी यह बाते राइट है वा रांग? बाबा झट समझा देंगे। कोई तो ब्राह्मणी भी इन बातों को समझ नही सक्ती है कि यह क्या है कौन है। कोई-2 में तो ऐसे प्रवेशता होती है जो कि चमाट भी मार देते है। गालियां भी देने लग पड़ते है। अब बाप थोड़ेही गाली देते होंगे। इन बातों को भी कोई-2 बच्चे समझ नही सक्ते है। फर्स्ट क्लास बच्चे भी कहीं-2 भूल जाते है। सभी बाते पूछनी चाहिये। क्यों कि बहुतों में माया प्रवेश कर लेती है। फिर ध्यान में जाकर क्या-2 बोलते रहते है। इससे भी बहुत सम्भाल चाहिये। बाप को पूरा-2 समाचार देना चाहिये। फलानी में मां आती है फलानी में बाबा आते है। इन सब बातों को छोड़ शिव बाबा का ऐक ही फरमान है कि मामेकम् याद करो। बाप को और सृष्टी चक्र को याद रखो। रचता और रचना का स्मरण करने वाली की शक्ल सदैव हर्षित रहेगी। बहुत है जिनको स्मरण होता ही नही है। तूफान बहुत भारी है। विवेक कहता है जब कि बेहद का बाप मिला है तो कहते है कि मुझे यादकरो तो क्यों नही हम याद करें। कुछ भी होता है तो बाप से पूछो। बाप समझावेंगे। कर्म भोग तो अभी रहा हुआ है ना। कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तो फिर तुम सदैव हर्षित रहेंगे तब तक कुछ ना कुछ होता ही रहेगा। यह भी जानते हो मिरूआ मौत मलूका का शिकार। विनाश होना है। तुम फरिश्ते बनते हो। बाकी तो थोड़े ही दिन इस दुनिया में हो। फिर तुम बच्चों को यह स्थूल वतन भासेगा ही नही। सूक्ष्म वतन और मूल वतन ही भासेगा। सूक्ष्मवतनवासी को कहा जाता है फरिश्ता वो तो बहुत कम समय बनते हो जब कि तुम कर्मातीत अवस्था को पाते हो। सूक्ष्म वतन में हड्डी मांस होता ही नही है। हड्डी मास ही नही है तो बाकी क्या रहा? सिर्फ सूक्ष्म शरीर ही होता है।